I.T.I. मनकापुर
07/02/2013

आदरणीय डा० सरीन साहब.

सादर अभिवादन

डा० साहब, आज का दौर संवेदनहीनता का चल रहा है चाहे हम कर्तव्यों के प्रति संवेदन हीन हों, चाहे समाज के प्रति चाहे व्यवसाय के प्रति और चाहे मानवता के प्रति। मेरी दृष्टि में सारी अराजकता के पीछे संवेदनहीनता एक प्रमुख कारण है। वैसे तो हर चिकित्सक का संवेदनशील होना अनिवार्य योग्यता होती है पर एक चिकित्सक का लहजा शायराना हो, बात-2 में इतनी विनम्रता कि उसकी आंखे छलक जाती हों, इतनी संवेदनशीलता कि समाज के दुखी एवं असाध्य रोगियों के प्रति पूरा समर्पण, डाक्टरी पेशे को शेर एवं दिल को छूलेने वाले लहज़े में अभिव्यक्त करना, शायद ईश्वर की आप पर असीम कृपा है जिसने एक व्यक्ति का व्यक्तित्व इतना बहुमुखी बना दिया।

डा० साहब, मैंने पहली बार जब दूरदर्शन के सायंकालीन प्रोग्राम Health India में आपका गौरव लाल मैडम के साथ साक्षात्कार देखा तो जिस लहजे से आप उत्तर दे रहे थे वह मेरे दिल को छू रहा था। उसके बाद तकरीबन हर एपीसोड मैं देखना चाहता था जिसमें आप मिलें परंतु ऐसा संभव नहीं हो सका कई बार आपको परिचर्चा में फिर सुना परंतु दिनांक 01.02.13 को सायं प्रसारित कार्यक्रम DELHI ROUND में उपराष्ट्रपति महोदय के साथ आपको और आपका Institute देखा तो पत्र लिखना मेरे लिए बेहद जरूरी हो गया। आपके इस मुकाम पर पहुंचने का कारण आपकी संवेदनशीलता है।

डा० साहब, पृथ्वी पर डाक्टर भगवान की प्रतिमूर्ति होता है। वह आदर एवं सम्मान का हकदार भी है परंतु यह पेशा भी विकृतियों से अछूता नहीं रह गया है। चंद लोगों के कारनामों से पूरा चिकित्सक समाज संदेह के घेरे में आता जा रहा है।

लेकिन समाज में कोई न कोई किरण अवश्य शेष रहती है जिससे रोशनी के बिखरने की उम्मीद रहती है जैसे आप जैसे लोग।

" ये स्याह रात नहीं नाम लेती ढलने का।
यही तो वक्त है सूरज तेरे निकलने का॥"

डा० साहब, इस पत्र का उद्देश्य कोई कसीदाकारी करने का नहीं है अपितु यह बताना है कि आप जैसे संवेदनशील लोगों को दुनियां आशा भरी नजरों से देख रही है और Notice कर रही है। संवेदनशीलता तभी आती ही है जब इंसान खुद से मुलाकात करता है, स्वयं की आत्मा से प्रश्न करता है।

हर दम तलाश-ए-गैर में रहता है आदमी।
डरता है कहीं खुद से मुलाकात न हो जाय॥

डा० साहब, आप उपचार करने के साथ-साथ अपने मरीजों की class उन्हें जागरूक करने के लिए अवश्य लें। शायद ही कोई होगा जो आपके लहज़े से प्रभावित न हो ईश्वर करे आपका ये लहजा, संवेदनशीलता और मुस्कान बनी रहे। जिन्दगी लम्बी नहीं, जिन्दगी बड़ी होनी चाहिए।

डा० साहब, मेरा परिचय मात्र इतना है कि मैं भारत सरकार के सार्वजनिक उपक्रम Indian Telephone Industries Ltd. Unit - MANKAPUR (Gonda). U.P. में कार्यरत हूं। गजलें लिखना, गीत लिखना मेरा शौक है। मिज़ाज शायराना है। अगर आपने मेरे पत्र को Notice किया तो प्रत्युत्तर में पुनः कुछ गीत गजलों के साथ पत्र भेजूंगा। किसी के मुक्तक के साथ पत्र की लाइनों को विराम दे रहा हूँ -

इक बिमल पहचान बन पाये कभी ऐसा तो हो।
गाँठ में उसके पसीने से धुला पैसा तो हो।
मैं नहीं कहता कि वो बन जाय सचमुच देवता,
चाहता हूं आदमी बस आदमी जैसा तो हो॥

आपको हार्दिक शुभकामनाओं के साथ प्रणाम।

- राजेश कुमार मिश्र-
A-B-51, संचार विहार
आई.टी.आई. मनकापुर-गोण्डा
उ०प्र० - 271308